लैलतुल-क़द्र (शबे क़द्र) को जागना

﴿ إحياء ليلة القدر ﴾

[हिन्दी - Hindi - هندي]

इफ्ता और वैज्ञानिक अनुसंधान की स्थायी समिति

अनुवादः अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

2010 - 1431

islamhouse.com

﴿ إحياء ليلة القدر ﴾

« باللغة الهندية »

اللجنة الدائمة للبحوث العلمية والإفتاء

ترجمة: عطاء الرحمن ضياء الله

2010 - 1431

islamhouse.com

بسم الله الرحمن الرحيم

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मैं अति मेहरबान और दयालु अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ।

إن الحمد لله نحمده ونستعينه ونستغفره، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا، وسيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وبعد:

हर प्रकार की हम्द व सना (प्रशंसा और गुणगान) अल्लाह के लिए योग्य है, हम उसी की प्रशंसा करते हैं, उसी से मदद मांगते और उसी से क्षमा याचना करते हैं, तथा हम अपने नफ्स की बुराई और अपने बुरे कामों से अल्लाह की पनाह में आते हैं, जिसे अल्लाह तआला हिदायत दे दे उसे कोई पथभ्रष्ट (गुमराह) करने वाला नहीं, और जिसे गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं। हम्द व सना के बाद :

लैलतुल-क़द्र (शबे क़द्र) को जागना

प्रश्नः

लैलतुल क़द्र (शबे क़द्र) को किस तरह जागा जाये ; नमाज़ पढ़ने में, या कुरआन करीम और सीरते नबवी का पाठ करने, वअ्ज़ व नसीहत (धर्मोपदेश) और मस्जिद में उसका जश्न मनाने में ?

उत्तरः

हर प्रकार की प्रशंसा और गुणगान केवल अल्लाह के लिए योग्य है।

सर्व प्रथम :

अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रमज़ान की अंतिम दस रातों में नमाज़, कुरआन की तिलावत और दुआ में जितना परिश्रम और

संघर्ष करते थे उतना परिश्रम और संघर्ष उनके अलावा अन्य रातों में नहीं करते थे। इमाम बुखारी और इमाम मुस्लिम ने आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत किया है कि : **''जब रमज़ान की अंतिम दस रातें प्रवेष करती थीं तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रात को (इबादत करने के लिए) जागते थे औ अपनी पत्नियों को भी (इबादत के लिए) बेदार करते थे और तहबंद कस लेते थे।''** (अर्थात संभोग से दूर रहते थे, या इबादत में कड़ा परिश्रम करते थे।)

तथा अहमद और मुस्लिम की रिवायत में है कि : **''आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अंतिम दस रातों में (इबादत करने में) जो परिश्रम और संघर्ष करते थे वह उनके अलावा अन्य रातों में नहीं करते थे।''**

दूसरा :

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ईमान के साथ और अज्र व सवाब (पुण्य) की नीयत से क़द्र की रात (शबे क़द्र) को क़ियाम करने (अर्थात इबादत में बिताने) पर उभारा और ज़ोर दिया है, अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत किया है कि आप ने फरमाया : **''जिसने ईमान के साथ और अज्र व सवाब की आशा रखते हुए लैलतुल क़द्र को क़ियामुल्लैल किया (अर्थात् अल्लाह की इबादत में बिताया) तो उसके पिछले गुनाह क्षमा कर दिए जायेंगे।''** (सहीह बुखारी व मुस्लिम)

इस हदीस से ज्ञात होता है कि लैलतुल क़द्र को क़ियामुल्लैल करने (तहज्जुद की नमाज़ पढ़ने) में बिताना धर्म संगत है।

तीसरा :

लैलतुल क़द्र में पढ़ी जाने वाली सबसे श्रेष्ठ दुआ वह है जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा को सिखायी थी, इमाम तिर्मिज़ी ने आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत किया है और उसे सहीह कहा है कि उन्हों ने कहा : "मैं ने कहा : ऐ अल्लाह के पैगंबर ! यदि मुझे पता चल जाये कि लैलतुल क़द्र कौन सी रात है तो मैं उसमें क्या कहूँ ? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : "तुम कहो :

"اللَّهُمَّ إِنَّكَ عَفُوٌّ تُحِبُّ الْعَفْوَ فَاعْفُ عَنِّي"

अल्लाहुम्मा इन्नका अफुव्वुन तुहिब्बुल अफ्वा, फा'फो अन्नी

.ऐ अल्लाह ! तू अत्यन्त क्षमा और माफी वाला है, और माफी को पसन्द करता है। अतः तू मुझे क्षमा और माफी प्रदान कर।" (तिर्मिज़ी)

चौथा :

जहाँ तक रमज़ान की किसी एक रात को इस बात के साथ विशिष्ट करने की बात है कि वही लैलतुल क़द्र (शबे क़द्र) है, तो उसके लिए एक ऐसे प्रमाण की आवश्यकता है जो अन्य रातों को छोड़कर उसी रात को निर्धारित और निश्चित करता हो। किन्तु रमज़ान के अंतिम दस दिनों की ताक़ रातें, दूसरी रातों से अधिक योग्य हैं, और सत्ताईसवीं रात समस्त रातों में लैलतुल क़द्र के सबसे अधिक योग्य है, क्योंकि इस बारे में ऐसी हदीसें वर्णित हैं जो हमारी उल्लिखित बातों पर तर्क और प्रमाण हैं।

पाँचवां :

जहाँ तक बिद्अतों का प्रश्न है तो वे न रमज़ान में जाइज़ हैं और न उसके अलावा अन्य दिनों में, क्योंकि अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से साबित है कि आप ने फरमाया :

''जिसने हमारी इस शरीअत में कोई ऐसी चीज़ ईजाद की जिस का उस से कोई संबंध नही है तो वह मर्दूद (अस्वीकृत) है।'' {बुखारी व मुस्लिम}

और एक रिवायत में है कि : ''जिसने कोई ऐसा काम किया जो हमारी शरीअत के अनुसार नहीं है तो वह मर्दूद (अस्वीकृत) है।''

अतः रमज़ान की कुछ रातों में जो जश्न किये जाते है हम उनका कोई आधार नहीं जानते हैं, और सब से बेहतरीन तरीक़ा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तरीक़ा है, और सब से बुरी बात धर्म में नयी ईजाद कर ली गई चीज़ें हैं।

और अल्लाह तआला ही तौफीक़ प्रदान करने वाला (शक्ति का स्रोत) है। तथा अल्लाह तआला हमारे पैगंबर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दया और शांति अवतरित करे।

देखिये : **फतावा इफ्ता और वैज्ञानिक अनुसंधान की स्थायी समिति (10/413).**